डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मानवता और पाप, सत्र 16, मूल पाप, रोमियों 5:12-18, जारी

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 16 है, मूल पाप, रोमियों 5:12 से 19, जारी।

हम मूल पाप के बारे में अपने अध्ययन को शास्त्रीय पाठ, रोमियों 5:12 से 19 में जारी रखते हैं।

हम रोमियों 5:13बी के पाँच दृष्टिकोणों में उलझ गए हैं। मैं उन्हें संदर्भ में देखना चाहता हूँ और अपनी खुद की कम-से-कम अचूक व्याख्या देने की कोशिश करना चाहता हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि पाँच दृष्टिकोणों की समीक्षा करना एक अच्छा विचार है। सामाजिक आलोचना दृष्टिकोण कहता है, यहाँ हमारा भ्रम, कठिनाई पॉल द्वारा आलोचना की तकनीकी भाषा, एक शैली का उपयोग करने से आती है, और वह एक विरोधी के साथ आगे-पीछे हो रहा है, और हमें उनमें से कुछ अन्य शब्दों की आपूर्ति करनी है।

सम्मानपूर्वक, मैं इससे सहमत नहीं हूँ। पूर्ण अर्थ वाला दृष्टिकोण, जो कहता है कि हमें शब्दों को बिल्कुल शाब्दिक रूप से लेना चाहिए, मुझे लगता है कि निश्चित रूप से गलत है, और इसीलिए हमारे पास चार अन्य दृष्टिकोण हैं क्योंकि हम तथाकथित सुधारकों के सीधे और सरल अर्थ से दूर चले जाते हैं जब सीधा और सरल अर्थ समझ में नहीं आता है। और यह कहना कि उनके खिलाफ पाप नहीं गिना गया, असंभव है।

बाढ़ के समय, सदोम और अमोरा के विनाश के समय मृत्यु होती है। मृत्यु है, पाप है, इसे गिना जाता है। पाँचवीं इंद्रिय पाप और अपराध के बीच अंतर करती है; मुझे नहीं लगता कि यह भी सही है।

तो, ये दोनों सबसे अच्छे लगते हैं। मरे और हेंड्रिक्सन कहते हैं, हाँ, एक कानून था, लेकिन यह ईश्वर का कानून है जो दिल पर लिखा है, जिसके बारे में 2.14.15 में बताया गया है। शायद सबसे कम बुरा, सबसे कम बुरा, कैल्विन और क्रेनफील्ड का सापेक्ष या तुलनात्मक अर्थ वाला दृष्टिकोण है, जिसे मैं अब दूंगा जब मैं इन चीजों को एक साथ रखने की कोशिश करूंगा। लेकिन इतना तो साफ है।

5:14, अंत में, कहता है कि आदम मसीह का प्रतीक है। यह वास्तव में महत्वपूर्ण है। और 13 को शुरू करने के लिए शब्द गार, किसी तरह से संकेत देता है कि 13 और 14 आगे बताते हैं कि उसने अभी 12:12 में क्या कहा, अपूर्ण स्थिति, बिना तब खंड के अगर, और इसका संबंध आदम के पाप करने पर मानवता के पाप करने से है।

इसलिए, जैसा कि एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, वैसे ही मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया। क्योंकि पाप तो व्यवस्था दिए जाने से पहले भी जगत में था। पाप था, और पापी भी थे।

लेकिन, पाप की गणना तब नहीं की जाती जब कोई निषेध के अर्थ में कोई कानून न हो, जैसे आदम और मूसा के साथ हुआ था। पाप की गणना तब नहीं की जाती जब कोई निषेध हो, एक अलग कानून हो। फिर भी, आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी शासन किया, जिनका पाप आदम के अपराध जैसा नहीं था।

इस प्रकार मेरी समझ यह है कि पॉल आदम के मूल पाप को आदम और मूसा के बीच मृत्यु की उपस्थिति के लिए नहीं, बल्कि आदम और मूसा के बीच मृत्यु के शासन के लिए स्पष्टीकरण के रूप में इंगित करता है। क्योंकि तब पाप था, इसलिए वह ऐसा कहता है। और अनुमान लगाइए कि पाप किस बात को पूर्वधारणा करता है? मृत्यु।

लेकिन मृत्यु की गणना वहां नहीं की जाती जहां आदमिक निषेध या मोज़ेक डेकोलॉग जैसा कोई स्पष्ट कानून नहीं है, क्योंकि यह वहां है जहां कोई कानून है। क्योंकि जहां निषेध है, मनुष्य, पाप मोटे अक्षरों में लिखा है। आप दोषी हैं कि आपने दस आज्ञाओं का उल्लंघन किया है।

एडम, तुमने एक निषेध तोड़ा है। मैं यही कर सकता हूँ। वैसे भी, इस पर ध्यान दो।

आदम के समय से लेकर मूसा के समय तक मृत्यु ने राज्य किया, यहाँ तक कि उन लोगों पर भी जिनका अपराध आदम के समान नहीं था। यहाँ तक कि उन पर भी, यह बात स्पष्ट है: किन लोगों पर कोई प्रत्यक्ष निषेध नहीं था जिसका उन्होंने उल्लंघन किया? आदम का अपराध, जो आने वाले व्यक्ति, अर्थात् मसीह का प्रतीक था।

यह महत्वपूर्ण है। आदम मसीह का एक प्रकार है। एक प्रकार पुराने नियम में मसीह और सुसमाचार का पूर्वरूप है।

यह एक ऐतिहासिक व्यक्ति, एक घटना या एक संस्था है। आदम मसीह का एक प्रकार है। हिब्रू 7. मलिकिसिदक मसीह का एक प्रकार है।

घटना। निर्गमन यीशु द्वारा लाए गए छुटकारे का एक प्रकार है। संस्था।

पैगंबर, पुजारी और राजत्व सभी ईश्वर द्वारा नियुक्त संस्थाएं हैं, जिनकी ऐतिहासिक वास्तविकता और ऐतिहासिकता थी, लेकिन ईश्वर की योजना में खुद से परे किसी महान व्यक्ति, यीशु और उसके द्वारा लाए जाने वाले उद्धार के बारे में बात की। अब, मुझे पता है कि 15, 16 और 17 में क्या हो रहा है। आदम उस व्यक्ति का प्रतीक था जो आने वाला था।

12 से शुरू करते हुए, उन्होंने तुलना शुरू की, और कहा कि आदम और मसीह किस तरह से अलग हैं। उन्होंने तुलना पूरी नहीं की, बल्कि उन दो अजीब आयतों में यह दिखाने के लिए चले गए कि आदम और मूसा के बीच का समय उन मनुष्यों की बात करता है जिनका भाग्य किसी

तरह आदम के पाप से जुड़ा हुआ था। और अब, वे कहते हैं, ऐसा लगता है कि आदम मसीह जैसा है।

तुरंत ही, वह पीछे हट जाता है, क्योंकि अगले तीन छंदों में, वह यह नहीं दिखाता कि आदम मसीह जैसा है। ऐसा 18 और 19 में होता है। अगले तीन छंदों में, वह कहता है, वे एक जैसे नहीं हैं, वे एक जैसे नहीं हैं, वे एक जैसे नहीं हैं।

आदम उस व्यक्ति का प्रतीक था जो आने वाला था। 14, अंत। पौलुस स्पष्ट रूप से कहता है कि आदम मसीह का प्रतीक है, जो पुराने नियम के वादों को पूरा करने के लिए आने वाला था।

इस अंश में मसीह का यह पहला उल्लेख है। तो, यह मूल पाप के बारे में है। बड़ा संदर्भ, नहीं, यह औचित्य के बारे में अधिक है।

लेकिन यह मूल पाप के बारे में है। याद रखें, मैंने पहले ही तर्क दिया है कि यह अंश आदम और मूल पाप से ज़्यादा मसीह और उद्धार से जुड़ा है। यहाँ, प्रेरित मसीह को आदम की पूर्ति के रूप में पेश करता है, जिसने किसी तरह से उसका पूर्वाभास कराया था।

5:15, लेकिन मुफ्त उपहार अपराध की तरह नहीं है। प्रेरित तुरंत यह दिखाने के लिए मजबूर हो जाता है कि आदम और मसीह कितने अलग हैं और मानव जाति पर उनके संबंधित प्रभाव क्या हैं। लेकिन अपराध जैसा नहीं है, मैं शाब्दिक अनुवाद कर रहा हूँ, लेकिन जैसा कि अपराध है, वैसा ही मुफ्त उपहार भी नहीं है।

पौलुस का मतलब है कि आदम के पाप और धार्मिकता के मुफ्त उपहार के बीच कई महत्वपूर्ण अंतर हैं। पद 17, जिसे मसीह लेकर आया। सबसे पहले, मुफ्त उपहार पाप के प्रभावों से कहीं ज़्यादा है क्योंकि बड़ा छोटे से ज़्यादा है।

क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से बहुत से लोग मर गए। यह तुलना बताती है कि यदि आदम का पाप एक मनुष्य, आदम के विरुद्ध बहुत से लोगों के मरने का साधन या कारण था, तो एक मनुष्य, यीशु मसीह के द्वारा प्राप्त किया गया उद्धार कितने लोगों को अधिक मिलेगा? मैं इसे अपने कोष्ठकों के बिना पढ़ने जा रहा हूँ। यदि आदम का पाप बहुत से लोगों के मरने का साधन था, तो एक मनुष्य, यीशु मसीह के द्वारा प्राप्त किया गया उद्धार कितने लोगों को अधिक मिलेगा? पॉल केवल उद्धार नहीं कहता है, जैसा कि मेरे अनुवाद में है।

इसके बजाय, वह कहता है, उद्धारण, परमेश्वर की कृपा और अनुग्रह में दिया गया उपहार, उद्धारण बंद करें। यह पौलुस का धार्मिकता को बचाने के अनुग्रहपूर्ण उपहार को कहने का तरीका है। आयत 14C और 15 की हमारी समझ को एक साथ रखते हुए, हमारे पास है, हालाँकि आदम मसीह का एक प्रकार है, आदम का पाप मसीह के उपहार से बहुत अलग है।

क्योंकि यदि आदम के पाप से बहुत से लोग मरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह और धार्मिकता का दान, जो दूसरे मनुष्य यीशु मसीह के द्वारा आया, बहुत से लोगों पर कितना अधिक हुआ? पाप तो आया, परन्तु अनुग्रह और बचाने वाली धार्मिकता बहुत अधिक हुई। जैसे ही वह कहता है, आदम

मसीह का एक प्रतीक है, जो 12 की अधूरी शर्त को पूरा करने का आधार है और 18 और 19 की कुंजी है। ओह, वह इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता।

वह आदम और मसीह को एक ही सांस में नहीं रहने दे सकता। जाओ, बस खिसक जाओ। ओह, नहीं, नहीं, नहीं।

वे एक जैसे नहीं हैं। और वह इसे दो बार और कहता है। आयत 16 में, एक बार फिर, पौलुस जानबूझकर बताता है कि कैसे आदम के पाप का मुफ्त उपहार और प्रभाव बहुत अलग हैं।

और न तो पाप और मृत्यु के रूप में, जो आया और न ही पाप और मृत्यु के रूप में, जो पाप करने वाले के द्वारा आया। मैं अपनी लिखी हुई बातें नहीं पढ़ सकता। माफ़ करें।

यह उपहार है। यह मुफ्त उपहार उस एक आदमी के पाप के परिणाम की तरह नहीं है। पाप और मृत्यु की तरह नहीं, जो आए।

यहाँ एक दीर्घवृत्त है, जिसे तुलना के दो भागों की तुलना करके देखा जा सकता है। 'as' खंड में 'so also' खंड के उपहार के अनुरूप कुछ भी नहीं है। इस संदर्भ से, मैं पाप और मृत्यु का सुझाव देता हूँ, जो पाप करने वाले के माध्यम से आते हैं।

यहाँ पर दिया जाना चाहिए, जैसा कि पद 15 की शुरुआत के वाक्यविन्यास से तुलना करने से स्पष्ट है। पौलुस आगे बताता है कि यह निर्णय एक अपराध के परिणामस्वरूप आया और सज़ा की ओर ले गया। परमेश्वर ने आदम के पाप पर निर्णय सुनाया।

उस फैसले का नतीजा सजा के बाद मिलने वाली सजा थी। इसके विपरीत, कई पापों से उपहार मिला और औचित्य सिद्ध हुआ। यहाँ, इसका मतलब है परिणामस्वरूप।

पिछले खंड की तुलना में एक अलग अर्थ में। यहाँ इसका अर्थ है कानूनी आधार स्थापित करने के अर्थ में आधारित है।

यहाँ, इसका अर्थ है परमेश्वर की योजना में अनुग्रहपूर्ण परिणाम। प्रेरित दोमुँहापन नहीं कर रहा है। परमेश्वर जिस तरह से न्याय और अनुग्रह में पाप से निपटता है, उसमें अंतर है।

पॉल अर्थगत अंतरों को व्यक्त करने के लिए रूप की भाषाई पहचान का उपयोग करता है। पॉल उस एक पाप के बीच तुलना कर रहा है जिसने इतने सारे लोगों के पतन का कारण बना, उन कई पापों के साथ जिन्हें औचित्य के अनुग्रहपूर्ण उपहार में क्षमा कर दिया गया।

आदम के एक पाप ने मानव जाति को बर्बाद कर दिया। मसीह-मुफ्त उपहार। कई पापों का प्रायश्चित।

और इसका परिणाम औचित्य में होता है। पौलुस पहले मनुष्य के पाप के कारण आई निंदा और दूसरे मनुष्य द्वारा लाए गए औचित्य के बीच भी अंतर बता रहा है।

आप खुश होंगे, क्योंकि 14 के अंत में आदम का उल्लेख मसीह के एक प्रकार के रूप में किया गया है। पौलुस दोनों के बीच अंतर बताता रहा है।

17 में भी वह ऐसा ही करता है। क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से मृत्यु ने उस एक मनुष्य के द्वारा राज्य किया, तो आदम के पाप से मृत्यु ने अन्य मनुष्यों पर भी राज्य किया।

यहाँ, एक के पाप का बहुतों पर बहुत प्रभाव पड़ता है। आदम का पाप वह साधन है जिसके द्वारा घुसपैठिया, मृत्यु, मानवजाति पर राजा के रूप में शासन करती है। शायद 13b की हमारी कम-से-कम सकारात्मक पहचान की पुष्टि करना कठिन हिस्सा है।

पौलुस इस विचार को पूरा करता है। जो लोग अनुग्रह की बहुतायत प्राप्त करते हैं, वे कितना अधिक प्राप्त करेंगे। और धार्मिकता के उपहार की बहुतायत एक मनुष्य, यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य करती है।

यहाँ पौलुस अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में है। यीशु मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह में गर्वित है। उसका मुख्य विचार है: जो लोग मसीह की धार्मिकता का उपहार प्राप्त करते हैं, वे मसीह के द्वारा अनन्त जीवन में कितना अधिक राज्य करेंगे। अनन्त जीवन का राज्य मृत्यु के राज्य से कहीं अधिक महान है।

एक बार फिर, वह दो आदम के बीच का अंतर दिखा रहा है। परमेश्वर ने हड़पने वाली मौत को बाहर निकाल दिया है। पॉल बहुत उत्साहित है।

बहुतायत, बहुतायत से। आदम के पाप के कारण मृत्यु ने राज किया। और भी बहुत कुछ, कम से ज़्यादा की ओर बहस करते हुए।

क्या वे लोग जो अनुग्रह और औचित्य प्राप्त करते हैं। मसीह में, मसीह के द्वारा अनन्त जीवन में राज्य करेंगे। आदम ने मृत्यु का राज्य लाया।

मसीह जीवन का शासन लाता है। यहाँ, इसे संभवतः युगांतशास्त्रीय रूप से देखा जाता है। शासन का भविष्य काल।

वैसे, वह इस समानता को बहुत प्रभावी ढंग से तोड़ता है। वह कहता है, मौत एक आदमी के माध्यम से राज करती है। वह यह नहीं कहता कि जीवन राज करता है।

वह कहते हैं, जो लोग अनुग्रह का उपहार प्राप्त करते हैं। और धार्मिकता का मुफ्त उपहार। वे राज्य करेंगे।

तो यह मृत्यु का राज्य है। और परमेश्वर के लोगों का जीवन का राज्य है। यह सुन्दर है।

पद 18. पद 18 और 19 में. हल्लिलूयाह.

पॉल मूल 'यदि' खंड पर लौटता है। पद 12 से संक्षिप्त विवरण। इसे संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए।

और इसे लंबे समय से प्रतीक्षित तब खंड के साथ पूरा करना। एक प्रोटैसिस। तो फिर।

मानो एक ही अपराध हुआ हो। इसका परिणाम सभी मनुष्यों के लिए दण्डनीय अपराध था। इस प्रकार, पौलुस अपने तर्क को एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष पर ले जाता है।

आदम के अपराध के कारण। इसका परिणाम निंदा हुआ। सभी मनुष्यों के लिए।

निंदा का नतीजा। यह एक टेलीक्यूज़ है। सभी पुरुषों के प्रति श्रद्धा और सम्मान के साथ।

यहाँ आदम का एक पाप ही जाति की निंदा का आधार है। इसी तरह, धार्मिकता के एक कार्य के माध्यम से। इसके परिणामस्वरूप सभी मनुष्यों के लिए जीवन का औचित्य सिद्ध हुआ।

इससे अब दो आदमों के बीच समानता भी स्थापित होती है। और उनके संबंधित प्रभाव भी।

उनकी जातियों पर। मसीह, धार्मिकता का एक कार्य। आदम के एक अपराध के समानांतर।

15, 16, और 17 में आदम और मसीह के बीच दूरी बनाने के बाद, वह विचार को पूरा करने के लिए 5, 12 पर लौटता है। मैं पद 14 के अंत के महत्वपूर्ण योगदान का उपयोग कर रहा हूँ।

आदम मसीह का एक प्रकार है। यानी वे समान हैं। वे इस मायने में समान हैं कि वे अपनी जातियों के प्रतिनिधि मुखिया हैं।

मेरा अपना विचार यह है कि आदम के पाप के कारण सभी मनुष्यों को दण्ड मिला। इसलिए मसीह की धार्मिकता के कारण भी ऐसा ही हुआ।

धार्मिकता के कामों से न्यायोचितता मिलती है। इसका परिणाम सभी मनुष्यों को जीवन मिलता है। मसीह, धार्मिकता का एक कार्य।

खास तौर पर इसका मतलब है, मृत्यु तक आज्ञाकारी रहना। यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु भी।

फिलिप्पियों 2:8. मसीह मृत्यु को बचाता है। यह आदम के एक अपराध से मेल खाता है। पौलुस सिखा रहा है कि मसीह मृत्यु तक आज्ञाकारी है।

विश्वासियों के लिए धार्मिकता प्राप्त की। मैं बहुतों और सभी की समस्या के बारे में बात करूँगा। हमारे पाठ में।

जब हम पढ़ते हैं कि, हम आदम के पाप के कारण दोषी ठहराए गए हैं। या कि मसीह के द्वारा बहुत से लोग बचाए जाएँगे। हम मुस्कुराते हैं।

ये कथन हमारे धर्मशास्त्र के अनुकूल हैं। हालाँकि, जब हम पढ़ते हैं, तो कई लोग आदम के साथ गिर गए। या सभी मसीह की धार्मिकता से बचाए जाएँगे।

हम चिंता करने लगते हैं। क्या रोमियों 5 यह सिखाता है कि कुछ लोग पतन से प्रभावित नहीं थे? केवल बहुत से लोग? क्या रोमियों, क्या यह सार्वभौमिकता सिखाता है? जैसा कि कार्ल बार्थ और उनके शिष्य, दुर्भाग्य से, क्रेनफील्ड। महान ब्रिटिश एंग्लिकन व्याख्याकार।

हालाँकि बार्थ ने इससे इनकार किया। दूसरे संदर्भ में, बड़े संदर्भ में।

हालाँकि दोनों के प्रति निष्पक्षता में, वे बाइबल की न्याय के बारे में शिक्षा के साथ सार्वभौमिकता को योग्य बनाते हैं। फिर भी, वे मुझे संतुष्ट नहीं करते। मुझे लगता है कि अगर हम इस मार्ग में या तो कई या सभी को आगे बढ़ाते हैं तो हम गलती करते हैं।

मुद्दा यह नहीं है। जब पॉल कहता है कि बहुत से, तो उसका मतलब बहुत से से है, सबके विरुद्ध नहीं।

वह दो श्लोकों में खुद का खंडन नहीं कर रहा है। बहुतों का मतलब सभी के बजाय बहुतों से नहीं है। और सभी का मतलब कई के बजाय सभी से नहीं है।

नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। अनेक का मतलब है सभी। अनेक का मतलब है एक के बजाय अनेक।

आदम या मसीह। सभी का मतलब है सभी, एक के विपरीत। आदम या मसीह।

जब पौलुस कई कहता है, तो उसका मतलब एक व्यक्ति, आदम के विरुद्ध कई लोगों से है। या एक व्यक्ति मसीह के विरुद्ध। वह एक और कई लोगों में अंतर कर रहा है।

उसका मतलब सभी के विरोध में बहुत से नहीं है। जब पौलुस सभी कहता है, तो उसका मतलब एक आदमी आदम या मसीह के विरोध में सब कुछ है। उसका मतलब सभी के विरोध में बहुत से नहीं है।

यह बहुत सुन्दर भाषा है जो यह संकेत देती है कि इन दोनों आदमों ने अपनी-अपनी जातियों पर विनाशकारी प्रभाव डाला। आदम, मानव जाति। मसीह, चुने हुए लोगों की जाति, विश्वासियों की जाति।

इसलिए, बहुत से और सभी दोनों सापेक्ष अभिव्यक्तियाँ हैं जो मानव जाति पर दो आदमों के महान प्रभावों की बात करती हैं। आदम के पाप या मसीह की धार्मिकता के प्रभावों की सीमा निर्धारित करने के लिए, हमें इस अंश और पवित्रशास्त्र के संपूर्ण संदर्भ को देखना चाहिए। आदम के पाप ने पूरी मानव जाति को प्रभावित किया।

जैसा कि इस तथ्य से पता चलता है कि सभी मरते हैं। 3, 9 से 20 की तुलना करें। 22c से 23।

मसीह की उद्धारक धार्मिकता उन सभी के लिए लाभदायक है, पद 17, जो धार्मिकता का उपहार प्राप्त करते हैं। पद 19 में, पौलुस अपना संदेश दोहराता है। बहुत से लोग धार्मिक बनाए जाएंगे।

यह श्लोक पिछले श्लोक के समानान्तर है। यह अगले प्रोटैसिस इफ क्लॉज के साथ तुलनात्मक क्लॉज है। जिस तरह एक आदमी की अवज्ञा के कारण, कई लोग पापी बन गए।

आदम की अवज्ञा के कारण, उसके लोग पापी बन गए। आदम के पाप को ऐसे माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसके द्वारा उसकी जाति पापी बन गई। यहाँ उसकी जाति को कई शब्द से नामित किया गया है, लेकिन वास्तव में, इसका अर्थ पूरी मानव जाति है।

यह एक आदम के विपरीत बहुत से हैं, लेकिन यह बहुत से हमें सटीक संख्या नहीं बताता है। पौलुस तुलना को पूरा करता है। इसी तरह, एक आदमी की आज्ञाकारिता के माध्यम से, बहुत से लोग धर्मी बनाए जाएंगे।

यहाँ पौलुस जानबूझकर दूसरे आदम को पहले आदम के विरुद्ध खड़ा करता है। मसीह की आज्ञाकारिता आदम की अवज्ञा को संतुलित करती है। आदम के द्वारा बहुत से लोग पापी बनाए गए, लेकिन मसीह के द्वारा बहुत से लोग धर्मी बनाए जाएंगे।

समानता स्पष्ट है। क्रूस पर जाने में मसीह की आज्ञाकारिता ही वह साधन है जिसके द्वारा उसके लोग धर्मी बनेंगे। औचित्य को यहाँ भविष्य के रूप में प्रस्तुत किया गया है, और इसे धर्मी बनाया जाएगा।

हम आम तौर पर औचित्य को पहले से ही, अतीत से जोड़ते हैं। जैसे ही कोई विश्वास करता है, उसे परमेश्वर द्वारा धर्मी घोषित कर दिया जाता है। पद 19 औचित्य के भविष्य के पहलू को सिखाता है, जैसा कि मत्ती 12:36, 37 में भी बताया गया है।

औचित्य का अर्थ अभी तक परमेश्वर के न्यायालय में अंतिम रूप से हिसाब-किताब चुकाना नहीं है। परमेश्वर की धार्मिकता अंततः ब्रह्मांड के सामने प्रमाणित होगी। उस दिन, दुष्टों को न्यायोचित रूप से दोषी ठहराया जाएगा, रोमियों 2:5। और धर्मी को धर्मी घोषित किया जाएगा, रोमियों 5:19।

इन बातों को एक साथ रखकर कोई कह सकता है कि सुसमाचार में औचित्य की वर्तमान घोषणा अंतिम दिन के फैसले की प्रत्याशा है। यूहन्ना 3, 17 और 18 की तुलना करें। यदि नए नियम की यह समझ सही है, तो सुसमाचार के हमारे प्रचार में बहुत अधिक तत्परता जुड़ जाती है।

पुरुषों और महिलाओं को परमेश्वर से अंतिम निर्णय सुनने के लिए अंतिम दिन तक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। यीशु मसीह की प्रतिक्रिया के आधार पर, वे अब न्यायाधीश की अंतिम घोषणा के बारे में आश्चस्त हो सकते हैं। 5.20, पौलुस ने दो आदम और उनके संबंधित लोगों पर उनके प्रभावों की अपनी स्पष्ट तुलना समाप्त कर दी है।

पद 21 और 22 में, वह परमेश्वर की व्यवस्था में व्यवस्था और अनुग्रह के बीच अंतर बताता है। व्यवस्था इसलिए आई ताकि अपराध बढ़ें। मूसा की व्यवस्था, पद 13, 14 से तुलना करें।

इससे न केवल पाप और अधिक स्पष्ट हो गया, बल्कि वास्तव में यह पाप को उकसाने का काम भी करता है। उस बुजुर्ग महिला के शब्दों में कुछ सच्चाई है, जिसने शिकायत की थी जब उसके पादरी ने दस आज्ञाओं पर उपदेश दिया था। पादरी, आपको लोगों के दिमाग में ये सारे बुरे विचार क्यों डालने पड़ते हैं? हमारे पापी होने के कारण, निषेध हमें पाप करने के लिए उकसाता है।

और यह सिर्फ छोटे बच्चों के लिए ही सच नहीं है। क्या मैं उसे कहता हूँ कि वह उस चीज़ को न छुए? शायद वह कभी उसे छूने के बारे में सोच भी न पाए। अगर मैं ऐसा करता हूँ, तो मैं उसके दिमाग में यह विचार डाल रहा हूँ।

ओह, वाह। बेशक, कानून ईश्वरीय है। हमारे पापी होने के कारण, निषेध हमें पाप करने के लिए उकसाता है।

बेशक, व्यवस्था ईश्वर द्वारा दिया गया पाप डिटेक्टर है जो पाप को अत्यधिक पापपूर्ण के रूप में पहचानता है। पौलुस आगे बताता है कि परमेश्वर का अनुग्रह हमारे सभी पापों से बड़ा है। लेकिन जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ अनुग्रह और भी अधिक बढ़ गया।

ध्यान दें कि पौलुस ने पाप और अपराध को समानार्थक शब्दों के रूप में कैसे इस्तेमाल किया है। उन्हें कठिन पाठ के समाधान के रूप में अलग नहीं किया जाना चाहिए। पौलुस यह दिखाकर परमेश्वर के अनुग्रह को बढ़ा रहा है कि परमेश्वर ने इसे अपने लोगों पर कैसे बरसाया।

परमेश्वर अपने शत्रु, पाप को उसे पराजित करने की अनुमति नहीं देगा। उसकी कृपा ने व्यवस्था द्वारा उकसाए गए पापों की भीड़ को निगल लिया। 21, यह एक उद्देश्य खंड के भीतर एक तुलनात्मक खंड है।

पद 20 में अनुग्रह की अधिकता अनुग्रह के राज्य की स्थापना के उद्देश्य से थी। पाप का राज्य, धार्मिकता का राज्य, अनुग्रह का राज्य। यहाँ बहुत सारे नियम चल रहे हैं।

हड़पने वाले, पाप और मृत्यु को वैध राजा, ग्रेस ने हटा दिया। जिस तरह पाप ने मृत्यु के साथ या मृत्यु के माध्यम से शासन किया, उसी तरह पाप और मृत्यु ने भी शासन किया। पाप और पाप के माध्यम से मृत्यु, श्लोक 12, ने मानव जाति पर एक दुष्ट शासन चलाया।

हम परमेश्वर के प्रति आभारी हो सकते हैं कि तुलनात्मक खंड में फिर खंड है। इसी प्रकार अनुग्रह भी धार्मिकता के द्वारा अनन्त जीवन तक, धार्मिकता के द्वारा अनन्त जीवन तक, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा राज्य कर सकता है। यह पद 20 और 21 में दो आदमों में से किसी एक का प्रेरित द्वारा पहला उल्लेख है।

हालाँकि, उसने उन्हें पूरी तरह से पीछे नहीं छोड़ा था। उसने बस अपनी कल्पना को, अपनी कल्पना के प्राथमिक फोकस को, पाप के विरुद्ध परमेश्वर के अनुग्रह पर स्थानांतरित कर दिया

था। पद 21 और 22 में जिस पाप और मृत्यु की बात की गई है, वह पहले मनुष्य के पाप का परिणाम है।

अनुग्रह मसीह से अलग नहीं है, जैसा कि पद 21 में दिखाया गया है, पाप और मृत्यु के कुरूप शासन के विरुद्ध। अनुग्रह सिंहासन पर आता है, उद्धरण, धार्मिकता के माध्यम से, उद्धरण बंद करें। पॉल यहाँ दिखाता है कि, उद्धरण, यह धार्मिकता के उपहार के माध्यम से है कि अनुग्रह शासन करता है, क्रैनफील्ड।

रोमियों 5 में परमेश्वर पाप को अनदेखा नहीं कर सकता था, न ही अध्याय 3 में। वह एक धर्मी परमेश्वर है जिसका अनुग्रह धार्मिकता के माध्यम से बचाता है। अनुग्रह के शासन का परिणाम अनन्त जीवन है। यह उस मृत्यु का स्थान लेता है जो पाप के बाद साथ चलने वाला साथी था।

यीशु मसीह के माध्यम से, हमारे प्रभु संकेत देते हैं कि उनके माध्यम से ही अनुग्रह का शासन स्थापित और कायम रहता है, क्रैनफील्ड। निम्नलिखित चार्ट हमें आदम और मसीह की तुलना और अंतर को समझने में मदद कर सकता है। यहाँ आदम है, और यहाँ मसीह है।

शीर्षक हैं कार्य, ओह गुड, ईश्वर का निर्णय, और परिणाम। मैं इस चार्ट और इसके परिणामों की व्याख्या करने जा रहा हूँ, और यहाँ एक वास्तविक आशीर्वाद है। फिर, अगला व्याख्यान मूल पाप और उसके मूल्यांकन के विचारों को उठाता है।

इस अनुच्छेद में आदम के कार्य को विभिन्न रूप से पाप, अतिचार या उल्लंघन, और अवज्ञा कहा गया है। मैं संक्षेप में बता रहा हूँ। आदम का कार्य पाप का कार्य था।

परमेश्वर का निर्णय: आदम के पाप के प्रकाश में पवित्र और न्यायी परमेश्वर को क्या निर्णय देना चाहिए? इसमें कोई संदेह नहीं है। दोषी, दोषी, दोषी ठहराना ही निर्णय है। इस अनुच्छेद में बार-बार स्पष्ट रूप से परिणाम मृत्यु है, शारीरिक और आध्यात्मिक मृत्यु।

पॉल सही है। आदम आने वाले का प्रतीक है। रोमियों 5:14, इसे C कहें, जो कि अंत है।

यदि आदम का एक कार्य पाप, अवज्ञा या अपराध था, तो मसीह के कार्य को इस अनुच्छेद में धार्मिकता या आज्ञाकारिता कहा जाता है। मसीह की धार्मिकता का एक कार्य आदम के एक पाप, अवज्ञा, एक अपराध या अपराध को पलट देता है। मसीह की धार्मिकता के प्रकाश में एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर को क्या निर्णय देना चाहिए? केवल एक ही निर्णय है, और वह निर्णय औचित्य है।

सबसे धिनौना पापी जो सचमुच पश्चाताप करता है और यीशु पर विश्वास करता है, उसे वही सजा मिलती है जो यीशु में विश्वास करने वाले किसी भी अन्य व्यक्ति को मिलती है। मैं श्रद्धापूर्वक बोलता हूँ। परमेश्वर को यीशु में विश्वास करने वाले किसी भी व्यक्ति को धर्मी घोषित करना चाहिए।

यह कोई तुलना नहीं है, यह परमेश्वर का बाहर से दबाव, उस पर बाहरी दबाव, बाहरी मांग नहीं है। नहीं, परमेश्वर अपने बेटे का सम्मान करने में प्रसन्न होता है, और क्योंकि उसके बेटे की मृत्यु एक प्रायश्चित थी क्योंकि यह धार्मिकता का एक कार्य था, रोमियों 3.24-26, रोमियों 5.18-19, केवल एक ही निर्णय है जो एक न्यायी और पवित्र परमेश्वर दे सकता है, और उसे इसे स्वयं और अपने बेटे के कार्य के प्रति सच्चा होना चाहिए। निर्णय धार्मिक है।

न्यायोचित, औचित्य। बाइबल के अनुसार, निंदा और औचित्य बिल्कुल विपरीत हैं। परमेश्वर को आदम के पाप की निंदा करनी चाहिए, और बाइबल में मूल पाप जैसी चीज़ सिखाई गई है।

कुछ लोगों को यह पसंद नहीं है। खैर, कौन कहता है कि उन्हें बाइबल की हर बात पसंद करनी चाहिए? अनंत नरक ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम विशेष रूप से पसंद करते हैं, लेकिन हम इसके अधीन हो जाते हैं क्योंकि यह परमेश्वर के पवित्र वचन की शिक्षा है। इसी तरह, आदम के एक पाप ने मानव जाति पर परमेश्वर की निंदा का फैसला लाया, और मसीह के धार्मिकता के एक कार्य, पिता के लिए उनके प्रायश्चित बलिदान ने, यीशु में विश्वास करने वाले सभी लोगों के लिए औचित्य का परमेश्वर का आवश्यक फैसला लाया।

परिणाम, जैसे आदम के पाप ने परमेश्वर की निंदा का फैसला लाया, और परिणाम शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह से मृत्यु थी, मसीह की धार्मिकता ने परमेश्वर के औचित्य के फैसले की मांग की, जिसके परिणामस्वरूप परमेश्वर के पुत्र में विश्वास करने वाले हर व्यक्ति को अनंत जीवन मिला।

मैं अगली बार फिर से इस चार्ट का सारांश दूंगा। अगले व्याख्यान में, हमें मूल पाप के विचारों की प्रस्तुति, उसका मूल्यांकन और अंत में, हमारे जीवन के लिए कुछ पादरी और व्यावहारिक अनुप्रयोगों से परिचित कराया जाएगा। रोमियों 5:12-19 पर एक श्रमसाध्य व्याख्यान के माध्यम से आपकी दृढ़ता के लिए धन्यवाद।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र संख्या 16, मूल पाप, रोमियों 5, श्लोक 12-19, जारी है।